महात्मागण तैयार क्यों नहीं होते?

9·5

॥ ॐ तत्सत ॥

आध्यात्मिक क्रान्ति

महात्माओं को धार्मिक चुनौती

[मह]ात्मागण तैयार [क्यों] नहीं होते?

[... महा]राज, श्री सत्यपाल जी, भगवान् श्री सत्य सांई [... रजनी]श, महर्षि महेश योगी, महर्षि मेंहीं, श्री जय गुरुदेव बाबा, श्री देवरहा बाबा, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी जी, श्री शङ्कराचार्य जी, श्री करपात्री जी आदि आदि भी तैयार नहीं !]

●

लेखक :

सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस

●

प्रकाशक :

सत्य ज्ञान परिषद, अमरपुरी आश्रम

(भागवत परसा)

बथुआ बाजार, गोपालगंज

(बिहार) भारत

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक क्रान्ति

विश्व के समस्त महात्माओं को धार्मिक चुनौती

महात्मागण तैयार क्यों नहीं होते ?

श्री बालयोगेश्वर जी महाराज, श्री सत्यपाल जी, भगवान् श्री सत्य सांई बाबा, भगवान् श्री रजनीश, महर्षि महेश योगी, महर्षि मेंहीं, श्री जय गुरुदेव बाबा, श्री देवरहा बाबा, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी जी, श्री शङ्कराचार्य जी, श्री करपात्री जी आदि आदि भी तैयार नहीं !



लेखक :—

सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस





प्रकाशक :

सत्य ज्ञान परिषद, अमरपुरी आश्रम
(भागवत परसा)
बथुआ बाजार, गोपालगंज
बिहार, भारत

प्रकाशक :
सत्य ज्ञान परिषद्
अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा)
वथुआ वाजार, गोपालगंज
विहार

●

प्रथम संस्करण, ३०००
दिसम्वर, १९७८
मूल्य १ रुपया २५ पैसा

●

मुद्रक :
अरविन्द प्रेस
के० ३७/१४ ए–१
चौखम्वा, वाराणसी ।

ॐ तत्सत्

दो शब्द

वन्धुओं प्रस्तुत पुस्तक "विश्व के समस्त महात्माओं को धार्मिक चुनौती" तथा "महात्मागण तैयार क्यों नहीं होते ?" आपको हस्तगत है। आज कल 'विश्व शान्ति' एवं 'विश्व वन्धुत्व' रूपी घोर समस्या विश्व के समक्ष उपस्थित है। साथ ही विश्व में इतने अधिक महात्माजी लोगों के वावजूद भी सत्य धर्म अथवा सत्य ज्ञान एक असाध्य वस्तु बनी हुई है, महात्मा जी लोगों के अनुयायिओं में सम्प्रदायवाद लागू हो करके एक दूसरे में प्रेम के स्थान पर ईर्ष्या, द्वेष तथा अहंकार घर कर गया है। शास्त्रों, महात्माजी लोगों की वाणियों तथा प्राकृतिक घटनाओं को देखते हुए यह कलयुग से सतयुग के तरफ युग परिवर्तन का समय भी चल रहा है जो एक प्रलयकारी रूप को लेते हुए चलता है। इन्हीं समस्याओं को सुलझाते हुए तथा इस घोर अधर्म का विनाश कर सत्यधर्म की स्थापना हेतु सत्य ज्ञान परिषद इस समय काफी प्रयत्नशील है। यह संस्था विश्व के समक्ष समस्त महात्मा जी लोगों चाहे वे सनातनी हों, इस्लामी हों या सिक्ख, इसाई हों, प्रत्येक के मूलभूत विचारों को एकत्रित करते हुए 'सत्य ज्ञान' की कसौटी पर कसते हुए विश्व के समक्ष यह रख देना चाहती है कि—

(१) मानव जाति एक हैं।

(२) मानव धर्म एक है और वह है 'सत्यज्ञान'।

(३) हम सभी को तन-मन-धन से एक होकर इर्ष्या, द्वेष के स्थान पर प्रेम के साथ रहते हुए दिखाना है।

इन उपरोक्त वातों की सिद्धि के साथ ही 'विश्व शान्ति' एवं 'विश्व-वन्धुत्व' का सिद्धान्त सफल हो जायेगा। इन्हीं उपरोक्त वातों को ध्यान

में रखते हुए ही सत्य ज्ञान परिषद, विश्व के समस्त महात्माओं को धार्मिक चुनौती देते हुए एक आध्यात्मिक क्रान्ति के रूप में विश्व के समस्त महात्माओं के सत्य ज्ञान तथा अपने सत्य ज्ञान को एक ही कसौटी से कसने के लिए परीक्षा एवं साक्षात्कार का विधान लागू किया है।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि समस्त भगवद-प्रेमी वन्धु प्रस्तुत पुस्तक के द्वारा समस्त भगवान् एवं महात्मा जी के विषय में थोड़ा वहुत जानकारी करते हुए उचित कार्यवाही करते हुए इस महत्व पूर्ण कार्य में हमारा एवं हमारी संस्था का साथ देंगे तथा सत्यज्ञान 'सत्यधर्म' के निर्णय के लिए महात्मा जी लोगों को तैयार करायेंगे। भगवान सबकी मदद करें।





ॐ तत्सत्

मेरा अपना विचार

प्रस्तुत पुस्तक 'विश्व के समस्त महात्माओं को धार्मिक चुनौती (महात्मा गण तैयार क्यों नहीं होते ?) आपको हस्तगत है। पुस्तक के लेखक 'श्री सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्द जी परमहंस' द्वारा लिखित यह दूसरी पुस्तक है। प्रथम पुस्तक 'परमात्मा का दर्शन कहाँ और कैसे' धार्मिक क्षेत्र में नये मान्यताओं को लेकर आध्यात्मिक क्रान्ति का श्रीगणेश किया तथा भक्तजनों के युग-युगान्तर के तृषित जिज्ञासा को सन्तुष्ट किया। धार्मिक मान्यताओं द्वारा परमात्मा, खुदा या (*God*) सबके लिए सुलभ रहते हुए कर्मकाण्ड के पाखण्ड के कारण सबके लिए दुर्लभ हो गया। उन्नीसवी सदी के अन्त में महान तत्व वेत्ता स्वामी विवेकानन्द जी ने पाश्चात्य देशों के भ्रमित जनमानस को वेदान्त का दिग्दर्शन सत्य धर्म सत्य ज्ञान की जानकारी कराया। परमात्मा के विषय में उनकी परिभाषा 'मनुष्य को ईश्वर को जानना चाहिए, दर्शन करना चाहिए तथा उनसे बातें करनी चाहिए' ने सबको आश्चर्य में डाल दिया तथा यह प्रमाणित हो गया कि परमात्मा जानने की वस्तु है तथा इसे जाना जा सकता है। हमारा धार्मिक दर्शन इस प्रकार के ज्वलन्त प्रमाणों से ओत प्रोत हैं। परमात्मा को जानने पाने वालों में हनुमान, सेवरी, गीध, अजामिल, अर्जुन, प्रह्लाद, ध्रुव का नाम अमर है। यदि यह बात दूसरे युग में सत्य प्रमाणित हुई है तो क्यों इस समय सत्य नहीं उतर सकती ? उतर सकती है। सत्य ज्ञान परिषद इसी सिद्धान्त, मान्यता का प्रायोगिक रूप दे रही है।

विश्व में तरह तरह के सम्प्रदाय तथा गणमान्य महात्मा इसी परमात्मा के विषय में जानकारी ज्ञान या योग की प्रक्रिया दे रहे हैं।

किन्तु इतने प्रवर्त्तकों के रहते विश्व में अशांति क्यों ? कारण स्पष्ट है जो सत्य ज्ञान दिया जा रहा है, वह सत्य नहीं। सत्य ज्ञान परिषद इसी ढोल के पोल को खोल कर विश्व के सम्मुख सत्य ज्ञान के प्रचार हेतु अग्रसर है तथा सबको सत्य ज्ञान की जानकारी दे रही है। प्रस्तुत पुस्तक इस सत्य ज्ञान की ओर संकेत है।

आशा ही नहीं विश्वास है कि यह पुस्तक आपके जिज्ञासा को शांति प्रदान करेगी।

श्री आनन्द मोहन श्रीवास्तव
सहायक खण्ड विकास अधिकारी
ग्रा० पो० तरयालक्ष्मीराम जि० देवरिया





ॐ तत्सत्

प्रार्थना

यस्य भासा विभातीदं सर्वं सदसदात्मकम् ।
सर्वाधारं सदानन्द स्वात्मानं तं हरिं भजे ॥

हे दिव्य पुरुष हे दिव्य देव युग युग तक तेरा अभिनन्दन,
मानस मराल के सुरभि पुंज शत कोटि नमन शत कोटि नमन ।
हे कृपासिंधु करुणा स्वामी हे दयानिधे हे सृजनहार ॥
हे युग द्रष्टा हे ज्ञान पुंज शतकोटि नमन शत कोटिनमन ॥
हे ब्रह्मपरात्पर परमेश्वर सर्वज्ञ चराचर जगत्राटा ।
हे दिव्यधाम हे सत्‌नाम शत कोटिनमन शत कोटिनमन ॥
हे सदानन्द हे चिदानन्द ॐ कारनाम अवतारी ।
हे अविनाशी हे सुखराशी शतकोटि नमन शतकोटि नमन ॥
हे निराकार हे निर्विकार साकार जगत के स्वामी ।
चरणों में अर्पित तन मन धन शतकोटि नमन शतकोटि नमन ॥
हे आदि देव हे मायापति हे लीलाधर मनंमोहन ।
आनन्द कन्द हे विश्वबन्ध शतकोटि नमन शतकोटि नमन ॥
हे दिव्य पुरुष हे दिव्य देव युग युग, तक तेरा अभिनन्दन ।
मानस मराल के सुरभि पुंज शतकोटि नमन शतकोटि नमन ॥

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरु पादुका ।
मन्त्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरुः कृपा ॥
गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यै स्तवें-
र्वेदैः साङ्गपद क्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।

ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो;
यस्यान्त न विदुः सुरासुरगणां देवाय तस्मै नमः ॥
हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें ॥

श्री आनन्द मोहन श्रीवास्तव
सहायक विकास खण्ड अधिकारी
वर्डपुर ९ जिला वस्ती, उ० प्र०
ग्राम-पो० तरया लक्षीराम जिला देवरिया, उ. प्र.



सत्य ज्ञान परिषद् का उद्धेश्य

जब हम सारे जन अपने को, प्रभु का प्रेषित मानेंगे।
और प्रभू ने हमको क्यों, भेजा है यह जब जानेंगे।।
जब अपने कर्त्तव्य कर्म पर, हम आरूढ़ बनेंगे सब।
जग बदलेगा युग बदलेगा, मानवता बिखरेगी तब।।
इस शरीर को स्वस्थ्य रखेंगे, इसको प्रभु का मन्दिर मान।
परमारथ में इसे लगायेंगे, तब होगा जग का कल्यान।।
केवल तन ही स्वच्छ नहीं, मन को भी अब करना होगा।
स्वार्थ लोभ सबको तजकरके, अब दिव्य भाव भरना होगा।।
दुर्भावों दुर्विचारों को, अब पास नहीं रखना होगा।
सदाचार सद्‌गुण से आलोकित, पथ पर हमें चलना होगा।।
कर्त्तव्यों को करना होगा, जनहित में अपना हित मान के।
स्वारथ को तजना होगा, तब ही होगा जग का कल्यान।।
जीवन का यह केन्द्र बिन्दु है, इसे नहीं हम भूलेंगे।
इसको सुन्दर और समुन्नत, कर हर्षित हो फूलेंगे।।
संयम सेवा त्याग साधना का, हम पाठ पढ़ेंगे जब।
सज्जनता का सुखद सुमङ्गल, वातावरण बनेगा तब।।
परम्पराओं से विवेक को, जब देंगे ऊँचा स्थान।
तब ही हो सकेगा जग में, पावन सुखकर युग का निर्माण।।
अन्य स्वर्ग की नहीं कामना, यहीं हम स्वर्ग को लायेंगे।
सबमें प्रेम प्रचार करेंगे, अमृतरस बरसायेंगे।।
नहीं रहेगा अब यह कलियुग, इसको अब बदलना होगा।
इस दुनिया में फिर से हमको, सतयुग को लाना होगा।।

आओ मित्रों पूर्ण करें हम, मिलकर यह संकल्प महान् ।
युग बदलेंगे जग बदलेगे, और करेंगे प्रभु का ध्यान ॥

—सत्यमेव जयते—

सत्यज्ञान परिषद
अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा)
पोस्ट—बथुआ बाजार
जिला—गोपालगंज
बिहार-भारत

———

ॐ तत्सत्

प्रथम अध्याय

(आध्यात्मिक क्रान्ति)

सत्य ज्ञान परिषद की घोषणाएँ

भगवत् प्रेमी वन्धुओं आप लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा परंतु वास्तविकता यह है कि यह बात पूर्णतः सत्य है। बात यह है कि भगवान् श्री सत्य सांईबाबा, भगवान् श्री रजनीश, श्री बाल्योगेश्वरजी महाराज, श्री सत्यपालजी महाराज, श्री देवरहा बाबा, महर्षि महेश योगी, महर्षि मेंहींजी, जयगुरुदेव बाबा, श्रीशंकराचार्य जी, श्री करपात्रीजी महाराज आदि आदि लोग इस समय विश्व में अपने को भगवान् महर्षि अथवा महात्मा घोषित कर रहे हैं। इन महापुरुषों के समक्ष मेरा कोई स्थान नहीं। मैं तो ईश्वर द्वारा प्रेषित उनका प्रतिनिधि हूँ। साथ ही प्रभु के तरफ से सत्यज्ञान रूपी एक बात प्राप्त हुई (मिली) जिसके द्वारा परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) की पूर्ण जानकारी, दर्शन प्राप्ति तथा उनसे बात-चीत एक सामान्य मानव की तरह बहुत ही आसानी से हो जाती है। इस बात की सामाजिक सत्यता के लिए हमने सैंकड़ों विद्वान, सुशिक्षित एवं बुद्धिमान् पुरुषों एवं स्त्रियों के समक्ष रखा प्रत्येक ने इसे सत्य ही कहा। इसके पश्चात् हमने अपने कार्यक्रमों के पोस्टर तथा पर्चे आदि भी इसी रूप के कि "परमात्मा को जानो-देखो-पहचानो तथा उनसे बातें करो।" के द्वारा प्रचार-प्रसार प्रारम्भ किया। हर समाज के व्यक्ति परीक्षा करने के लिये आते गये और परीक्षा करने के बाद इसके सत्यता की घोषणा करते गये। जब इस प्रकार भी इसे गलत सिद्ध करने वाला कोई नहीं मिला तब हमने विचार किया कि इस बात (सत्यज्ञान)

को ऐसे व्यक्तियों के समक्ष रखे जायं, जो इसकी सच्ची परीक्षा कर सके। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमने इन उपरोक्त भगवानों, अवतारियों, महर्षियों आदि के समक्ष इस बात का एक घोषणा पत्र भेजा कि "सत्यज्ञान" वह है जिसके द्वारा परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) की जानकारी, दर्शन, प्राप्ति तथा उनसे बात-चीत हो सके।"कुछ मूलभूत प्रश्नों के साथ-साथ ही एक पुस्तक भी इस बात (सत्यज्ञान) को यह कहते हुए भेजा कि "यदि आपके पास यह सत्यज्ञान हो तो वह सत्य ज्ञान है कि नहीं अपना साक्षात्कार देने के लिए तैयार हों, और यदि न हो तो मेरे पास है आप मेरे इस सत्यज्ञान की सत्यता का साक्षात्कार कर सकते हैं। अर्थात् उपरोक्त समस्त भगवानों एवं महात्मा जी लोगों से यह कहा जा रहा है कि या तो आप लोग हमें या हमारे शिष्ट-मण्डल को परमात्मा खुदा या गॉड (*God*) की जानकारी, दर्शन, प्राप्ति तथा उनसे बात-चीत करावें और यदि न करा सकते हों तो हमारे यहाँ आकर करें, तब जन-जन को उपदेश दें। यदि आपको हमारे यहाँ आने में मानहानि अथवा कोई परेशानी महसूस होती हो तो आप हमें बुलायें। यदि इसमें भी कोई परेशानी की बात हो तो न आवें और न बुलावें। आप जहाँ भी हों समय निकाल कर हमें सूचित कर देवें कि अमुक तिथि को अमुक स्थान पर रहूँगा, आप वहीं मिलें, तो मैं वहीं मिलकर इस "सत्यज्ञान" की परीक्षा दे सकूँ अथवा आपके ज्ञान की परीक्षा ले सकूँ।

हमारा शिष्ट-मण्डल साथ ही हम भी आप के आभारी होते, यदि आप लोग (भगवानों एवं महात्माओं) कोई निश्चित तिथि एवं निश्चित स्थान बताते जिस समय और स्थान पर आप लोग तथा हम लोग अपने-अपने "सत्यज्ञान" की परीक्षा कर करा लेते। परन्तु बहुत ही अफसोस की बात है कि बार-बार पत्राचार के बावजूद भी आप लोगों (भगवानों एवं महात्माओं) में से कोई भी तैयार नहीं हो रहा है।

उपरोक्त समस्त बातों के आधार पर तथा इस 'सत्यज्ञान' के आधार पर हमें पूर्ण विश्वास है कि इन भगवानों (बनने वाले) एवं सन्त महात्माओं को इस 'सत्यज्ञान' अथवा परमात्मा के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं है। व्यर्थ में ये लोग अपनी-अपनी घोषणाएँ भगवान्-अवतारियों या सन्त महात्माओं के रूप में करा रहे हैं। इन लोगों का ज्ञान और ये लोग सत्य हैं तो तैयार क्यों नहीं होते ?

भगवत् प्रेमी बन्धुओं इन बनने वाले भगवानों एवं सन्त महात्माओं में से किसी को भी यह मालूम नहीं है कि सत्यज्ञान (सत्यधर्म) क्या है ? ये सभी लोग योग के कुछ साधन मात्र ही जानते हैं। परन्तु नाजानकारी एवं नासमझदारी वश अथवा भ्रमपूर्वक उन्हीं योग के कुछ साधनों को आत्मज्ञान, तत्वज्ञान, ब्रह्मज्ञान समझ बैठे हैं। तथा इसी भ्रमपूर्ण बात को अपने-अपने अनुयायियों को भी बतला रहे हैं। ये अनुयायी बेचारे अध्यात्म के विषय में क्या जानें ये विद्वान् एवं शिक्षित तो अवश्य हैं परन्तु इनको ज्ञान अथवा योग के विषय में कोई जानकारी तो है नहीं। धर्मगुरुओं द्वारा जिस तरह बताया जायगा इसी तरह ये लोग करेंगे जब भगवानों एवं महात्माओं अर्थात् इन लोंगो के धर्मगुरुओं को ही जब 'सत्यज्ञान और योग' अन्तर नहीं मालूम तब ये लोग कैसे जाने ? इसलिए इन लोंगो (अनुयायिओं) ने ,अपने-अपने धर्मगुरुओं (भगवानों एवं महात्माओं) के योग को ही उनके आधार पर 'सत्यज्ञान' मान बैठे हैं।

भगवत् प्रेमी अथवा खुदा के दीन की राह पर चलने वाले अथवा सत्य के प्रेमी बन्धुओं चाहें आप हिन्दू हों या मुसलमान, क्रिश्चियन हों या सिक्ख मेरा प्रत्येक से अनुरोध है कि आप लोग यदि किसी भी धर्म गुरु अथवा धार्मिक सम्प्रदाय से सम्बन्धित हों तो आप लोग अपने-अपने धर्म गुरुजी से इस "सत्यज्ञान (तौहीद) जिसके द्वारा परमात्मा, खुदा या

गॉड (*God*) की जानकारी, दर्शन तथा उनसे वातचीत होता है" के विषय में पूछें। साथ ही ज्ञान और योग की जानकारी अलग-अलग रूप से करें। ज्ञान और योग के अन्तर को भी जानने की कोशिश करें। जव आप लोग इन वातों को अपने-अपने धर्म गुरुओं के समक्ष रखेंगे तव अपने आप उनकी वास्तविकता का पता लग जायगा। आप लोग मेरे अनुरोध पर अपने-अपने धर्मगुरु जी से यह भी तो पूछें कि आखिर ये लोग "सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस" से वात क्यों नहीं करना चाहते। यदि मैं नास्तिक, अहंकारी, घमण्डी, दुष्ट या जो भी हूँ पर आप लोग तो सामर्थी हैं। थोड़ा समय निकाल कर हमसे भी वातें करके अपना-अपना निर्णय समाज के समक्ष रखते। तव पता लग जाता "कि कौन क्या है ?" ये लोग तैयार क्यों नहीं होते ? यह पूछे तव पता चलेगा।

वन्धुओं बहुत महात्मा लोग तो योग के दो-चार क्रियाओं जैसे — नाम, जप, ध्यान आदि क्रियाओं को वता देते हैं तथा ध्यान आदि के द्वारा कुछ किसी प्रकार की ज्योति को दिखलाकर यह घोषणा कर रहे है कि केवल ज्योति दिखाने वाला गुरु ही अवतारी अथवा भगवान् होता है। तव मेरा प्रश्न है कि क्या सभी योगी अवतारी और भगवान् ही हैं। क्योंकि थोड़ा वहुत किसी न किसी प्रकार की ज्योति का दर्शन तो प्रत्येक योगी करते ही हैं। वास्तविकता तो यह है कि इन लोगों से पूछा जाय कि ज्योतियाँ तो पाँचों तत्वों की भी होती हैं और ईश्वर का भी तो किसी भी ज्योति को ईश्वर कैसे मान लें, और नाम क्या ? कौन रखा है ? पहले-पहल यह कहाँ से निकला ? आदि आदि। वन्धुओं योग के माध्यम से ज्योति दिखाने मात्र से ही कोई अपने को अवतारी या भगवान् की वात करता है तो यह वात पूर्णतः असत्य, यानी विल्कुल झूठ है। मात्र योग का जानकार भगवान् एवं अवतारी नहीं हो सकता।

भगवान् अथवा अवतारी वह है जो योग के पूर्ण अंगों, (तौहीद)

सत्य ज्ञान, सम्पूर्ण मुद्राओं आदि का ज्ञाता हो अर्थात् धर्म सम्बन्धी, मुद्रा सम्बन्धी, साधना सम्बन्धी, मौत सम्बन्धी, परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) सम्बन्धी सभी बातों का पूर्ण जानकार हो। तभी तो ईश्वर के सर्वज्ञता रुपी गुण सत्य होगा। अर्थात् अवतारी या भगवान् वह हो सकता है जिसे इन उपरोक्त बातों की सैद्धान्तिक, प्रायौगिक एव व्यावहारिक पूर्ण जानकारी हो। जिसके द्वारा चाहे जो भी हो जैसी भी शंका लेकर आता हो उसका समाधान वेद, पुराण, गीता, रामायण, बाइबिल, कुर्आन आदि द्वारा प्रमाणित कराते हुए करता हो।

बन्धुओं आप चाहे जो समझें परन्तु यह मैं सत्य कहता हूं कि इन उपरोक्त भगवानों, महर्षियों एवं सन्त महात्माओं में से किसी के पास भी यह सत्यज्ञान नहीं है। इन लोगों को केवल योग के कुछ क्रिया-साधन की ही जानकारी है जिसके आधार पर ये लोग अपने अनुयायिओं के समक्ष अपने को जो घोषित करा लेवें। यदि ये लोग भगवान् अवतारी एवं महर्षि आदि है, इन लोगों का ज्ञान सत्य है तो मैं कहता हूं कि ये लोग भगवान् एवं अवतारी बिल्कुल ही नहीं है, इस बात को मैं वेद, पुराण, गीता, रामायण, बाइबिल एव कुर्आन गुरु ग्रन्थ साहब आदि आदि से प्रमाणित भी करा दूंगा कि ये भगवान् एवं अवतारी किसी भी कारण अथवा रुप से नहीं हो सकते तथा इनके पास सत्यज्ञान भी नहीं है, हाँ योग के कुछ क्रिया-साधन मात्र अवश्य है।

प्रत्येक धर्म गुरुओं के अनुयायिओं, धार्मिक सम्प्रदायों के सदस्यों तथा अन्य प्रेमी सज्जनों मेरी उपरोक्त बातें अक्षरशः सत्य हैं। यदि आप लोगों को सन्देह हो तो मेरा साग्रह अनुरोध है कि आप लोग किसी भी तरह से अपने-अपने धर्मगुरुओं को सत्यज्ञान की सत्यता के लिए मेरा साक्षात्कार लेने तथा उनको अपना साक्षात्कार देने के लिए तैयार करायें। मैं तैयार हूं। ये लोग जब सत्य है और इन लोगों का ज्ञान सत्य है तो

आखिर वात क्या है कि ये लोग तैयार नहीं होते। यदि कोई वात होवे तो वह भी हमसे वताया जाये। जव ये लोग (भगवान् एवं महात्माजी लोग) धर्म के प्रचार-प्रसारके लिए ही निकले हैं। तो सत्य धर्म (तौहीद) को वताना या यदि कोई किसी वात सत्य धर्म (तौहीद) कहता है तो उसकी सत्ययताकी परीक्षा करना आदि तो इनके कर्त्तव्य के अन्तर्गत आता है। यदि ये लोग यह कहें कि मेरा कोई कर्त्तव्य नहीं तो उपदेश क्यों देते हैं। यदि ये उपदेश देते हैं तो इन लोगों को अपने तथा अन्य के उपदेशों की परीक्षा करनी तथा करानी आवश्यक है। यदि ये लोग तैयार नहीं होते तव तो यह कहा ही जायेगा कि ये लोग सारा समय असत्य वातों के प्रचार-प्रसार में लगाते हुए अध्यात्म (तौहीद) के विषय में नाजानकार लोगों को भ्रम में डालते जा रहे हैं।

वन्धुओं पढ़ने वाला तेज विद्यार्थी कभी भी परीक्षा से भागता नहीं, वल्कि वह वार-वार परीक्षा देने के लिए तैयार रहता है चाहे जो भी परीक्षा लेने वाला हो, इसकी परवाह वह नहीं करता। उसी तरह से उन लोगों को यदि सत्यज्ञान (तौहीद) की जानकारी रहती तो साक्षात्कार लेने और देने में कोई परेशानी या कठिनाई नहीं होती। परेशानी या कठिनाई तो उस विद्यार्थी को होती है जो उस विषय वस्तु का जानकार नहीं। जिसकी परीक्षा देनी है इसीलिए अपनी इज्जत, प्रतिष्ठा वचाने के लिए वह परीक्षा ही नहीं देता। मेरा तो सिद्धान्त यह है कि चाहे आप परीक्षा देकर अनुत्तीर्ण हों तव भी अनुत्तीण ही कहलायेंगे और नहीं परीक्षा देंगे तव भी अनुत्तीर्ण वाला ही स्तर रहेगा। नहीं परीक्षा देने से उत्तीर्ण घोषित नहीं हो सकते। वही वातें यहाँ भी हैं।

आप सभी वन्धुओं के समक्ष वह वात पुनः वतायी जा रही है कि "यदि इन लोगों (भगवानों एवं महात्माओं) को सत्यज्ञान (तौहीद) (सत्यधर्म) की जानकारी अर्थात् परमात्मा, खुदा या (*God*) की

जानकारी, दर्शन तथा उनसे बात-चीत कराने वाला ज्ञान इन लोगों के पास हो तो उसकी सत्यता के लिए साक्षात्कार देने के लिए अब से भी तैयार हों। यदि न हों तो मैं कहता हूँ परमात्मा, ख़ुदा या (*God*) की जानकारी, दर्शन, प्राप्ति तथा उनसे बात-चीत कराने वाला सत्यज्ञान मेरे पास है। ये लोग चाहें तो आकर या बुलाकर या अपने स्थान और समय कि कब और कहाँ रहेंगे, मैं वहीं पहुँच जाऊँ और मेरा तथा मेरे सत्यज्ञान की परीक्षा या साक्षात्कार हो जाये। अधिक क्या कहूँ ? इन लोगों के नहीं तैयार होने के ही कारण कठोर-कठोर वाणियों में मेरी घोषणायें हो रहीं हैं।

भगवत् प्रेमी सज्जनों से यह कहते हुए महान आश्चर्य भी हो रहा है परन्तु हमारा कर्तव्य होता है कि यदि किसी बात या वस्तु की जानकारी हो और वह बात अथवा वस्तु आश्चर्य जनक होते हुए भी सत्य- एवं कल्याणकारी हो तो उसे जनाया अथवा बताया जाय। दुनिया माने या न माने हमें अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए। इसी कर्त्तव्य को ध्यान में रखते हुए ही हमारी प्रत्येक कार्यवाही हो रही है।

मैं तो एक बात जानता हूँ वह यह कि "यदि मेरी बातें अथवा वस्तु सत्य एवं कल्याणकारी होगी तो दुनिया में कोई आजकल माने या न माने परन्तु कभी ऐसा समय आयेगा जबकि दुनियां का बहुसंख्यक धार्मिक व्यक्ति उसी तरह तरसेगा तथा हाय ! हाय ! करेगा जिस तरह राम, कृष्ण, ईशा, मुसा, सुकरात और नानक, मुहम्मद साहब आदि के आने पर उनके समय में तो लोग उल्टी-सीधी बातें करते रहे, विरोध करते रहे परन्तु चले जाने पर आज-कल हरे राम हरे कृष्ण और कलाम-पाक में मुहम्मद साहब अल्लाह के रसूल थे जोड़ दिया गया जिसे काफी धुन लगाकर पढ़ा तथा गाया जा रहा है। इतना नहीं इसके लिए जीवन भी समर्पण कर दिया जा रहा हैं। यही स्थिति पुनः आप लोगों में से यदि कोई शेष रहा तो अवश्य देखेगा पुनः होगी।

वन्धुओं मेरी उपरोक्त घोषणा विल्कुल सत्य है। हमने लगभग सभी भगवानों एवं महात्माओं जैसे—श्री वाल्योगेश्वर जी महाराज, श्री सत्यपालजी महाराज, भगवान् श्री सत्य साईं वावा, भगवान् श्री रजनीश, महर्षि महेश योगी, महर्षि मेंहीं, श्री जय गुरुदेव वावा, श्री देवरहा वावा, श्री शंकराचार्य जी, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी, श्री करपात्री जी महाराज, अरविन्द आश्रम तथा एक क्षेत्रीय सामान्य महात्मा आत्मानन्द जी आदि आदि के पास कुछ 'मूल-भूत प्रश्नों' के साथ एक-एक पंजीयन-पत्र (रजिस्टर्ड लेटर) तथा तीन-तीन अनुस्मारक पत्र (रिमाइण्डर्स) भेजा गया। परन्तु कोई प्रश्नों का उत्तर देने अथवा अपना साक्षात्कार कराने या मेरा साक्षात्कार करने के लिए तैयार नहीं हो रहा है।

वास्तविकता यह है कि अपने-अपने विषय में जानकारी सवको होती है। इन मूलभूत प्रश्नों ने सवका कलेजा दहला दिया है। इन प्रश्नों को देखते ही देखते उपरोक्त समस्त भगवानों, महर्षियों एवं महात्मा जी लोगों की हालत खराव हो गयी है। सत्य वात यह है कि इन मूल भूत प्रश्नों के विषय में इन उपरोक्त भगवानों एवं महात्मा जी लोगों में से किसी को जानकारी तो है नहीं, यदि है भी तो वहुत कम। यदि ये लोग तैयार हो जाय तो इनकी पचासों, सैकड़ों वर्षों से वनी वनायी ख्याति अथवा अपने अनुयायिओं के वीच वनी वनायी महत्व की समाप्ति हो जाय। इसी भय से कोई तैयार नहीं हो पा रहा है।

मूल-भूत प्रश्न निम्नलिखित हैं--

(१) सत्य ज्ञान (सत्य-धर्म) क्या है ?

(२) योग क्या है ? क्या ज्ञान और योग में कोई अन्तर भी है ?

(३) क्या परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) को जाना, देखा तथा उनसे वातें की जा सकती हैं ? यदि नहीं तो क्यों और हाँ तो कैसे ?

(४) क्या परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) अपनी शक्तियों के साथ अवतरित हो चुका है? यदि हाँ तो कहाँ और उसे कैसे जाना, देखा, पहचाना तथा उनसे बातें किये जाँय और यदि नहीं तो कब और कहाँ होगा?

उपरोक्त प्रश्नों के साथ कुछ और भी प्रश्न रहे परन्तु पूर्वोक्त भगवानों एवं महात्मा जी लोगों में से कोई भी तैयार नहीं हो रहा है। मेरा कहना है कि यदि ये लोग यह सोचते हों कि यह कोई व्यक्ति अनायास ही करता होगा तो यह उनका भ्रम है क्योंकि ऐसा करने वाली भी एक संस्था ही है। दूसरा यदि यह सोचें कि ऐसी-घोषणा करना किसी महात्मा का कार्य नहीं। कोई नास्तिक या अहंकारी होगा तो इसे भी वहीं से अपने-आप नहीं मान लेना चाहिए क्योंकि आप तो सामर्थ्य-वान है। सामने होकर, बातें करके, देख लेवें कि यह कौन हैं? और कैसा है? हो सकता है आप तीसरा तर्क यह भी पेश करते हों कि महात्मा को अपने-अपने कार्यों से मतलब होना चाहिए दूसरे से क्या मतलब? तो आप का यह तर्क तो बिल्कुल ही गलत होगा। क्योंकि भगवान् एवं महात्मा का चोंगा पहनकर सामान्य भगवद् प्रेमी बन्धुओं एवं माताओं-बहनों को भ्रम में डालकर फँसाये रखने वालों के लिए यह आवश्यक होता है कि ऐसा किया जाय जिससे वास्तविकता का पता लग जाय। ऐसा ही नारद ने भी किया था, सन् १८९४ में शिकांगो सम्मेलन भी इसी बात को ध्यान में रखकर किया गया था जिसमें स्वामी विवेकानन्द जी भी गये थे। ऐसा भगवान् शंकराचार्य ने भी किया था, जनक जी भी किये थे। इस तरह हर समय में हुआ है और इस समय भी यहाँ करने का प्रयत्न जारी है। ऐसा कार्य अवश्य करना चाहिए जिससे कि सत्यज्ञान (तौहीद) (सत्य-धर्म) की जानकारी जन-जन तक पहुँच सके ताकि जो सत्य-धर्म का प्रेमी हो वह सत्य ज्ञान (तौहीद)

से वंचित न रह जाय। कोई भी जो योग को ही ज्ञान समझ बैठे हैं भ्रम में न पड़े रहें अर्थात् सत्यज्ञान की खोज करें।

वन्धुओं आप लोग मुझे जादूगर कहें या हिप्नोटाइजर या मिस्मरिज्म वाला कहें या आप जो चाहें वह कहें। इसके लिए मुझे आप से कुछ भी नहीं कहना है। परन्तु एक बात अवश्य कहना है कि मैं चाहे जो भी रहूँ या मुझे आप चाहे जो भी माने किन्तु मेरी बात (सत्य ज्ञान) या वस्तु सत्य एवं कल्याणकारी है। इसलिए मेरा यह परम कर्त्तव्य होता है कि मैं इसकी जानकारी जन-जन तक को करा दूँ। हालांकि यह भी मुझे जानकारी है कि सभी इसे नहीं जान सकते फिर भी जो जिज्ञासु सत्यान्वेषी, श्रद्धालु, निष्कपटी एवं त्यागी होंगे, उनके पाप-पुन्य पर ध्यान न देते हुए उनको परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) की जानकारी, दर्शन तथा उनसे बातचीत करायी जा सकती है। आप से अनुरोध है कि आजकल विश्व में कहीं भी, कोई भी कराता हो तो आप अवश्य करें, यही जीवन का सर्वोत्तम एवं श्रेष्ठतम लक्ष्य है, मानव जीवन की परम-गति सम्पूर्ण सृष्ठि का परमपद यही है मोक्ष अथवा मुक्ति यही है, अमर-त्व की प्राप्ति भी इसी सत्यज्ञान से होती है। वन्धुओं अपने मानव जीवन को वर्बाद मत करें। इसे सफल वनाएँ। मानव जीवन की पूर्ण सफलता इसी सत्यज्ञान में निहित है। आप मेरे इस अनुरोध, को मान लें। यदि यह उपरोक्त सत्यज्ञान जब कहीं न मिल रहा हो, तब मेरे पास आयें; मैं आपसे सत्य कहता हूँ इसे जानें, देखें, तथा बात-चीत करते हुए पहचा-नने की कोशिश करें। मेरे यहाँ यह सत्यज्ञान है। किसी को भी परीक्षा करना हो कर सकता है। परन्तु एक ही विशेष बात है कि श्रद्धालु एवं जिज्ञासु तथा निष्कपट भाव से ही कोई कार्यवाही करें।

सज्जनों यह मेरी घोषणा है आप माने या न माने परन्तु मैं तो पर-मात्मा को जानता हूं, देखता हूं, तथा उनसे बात-चीत भी करता हूँ इस-लिए जनाने, दिखाने तथा उनसे बातें कराने की बातें भी करता हूं उसी

तरह जिस तरह ब्रह्मा, नारद, हनुमान, सेवरी, अर्जुन, उद्धव, गोपियाँ, ईशा, मूसा, प्रहलाद, ध्रुव आदि आदि ने देखा था। भाई ठीक उसी तरह, दूसरे तरह नहीं। इसीलिए केवल कहता ही नहीं हूं घोषणा भी कर रहा हूं और तव तक यह घोषणा करता रहूंगा जवतक कि मेरा शरीर न छूट जाय या कोई आकर इसे जान-देख तथा पहचानकर गलत न सिद्ध कर दे। इसे गलत सिद्ध करने के लिए चारों वेदों के जानकार, छ दर्शनों आदि के जानकार अनेकों आर्यसमाजी आये और इसकी सत्यता को स्वीकार करके चले गये। आप ही आयें और गलत सिद्ध कर दें। मैं अवश्य मान लूंगा। परन्तु मनमानी नहीं होना चाहिए। वेद, पुराण, गीता, रामायण, वाइविल, कुर्आन अथवा किसी भी पहुँचे हुए सन्त महात्माओं जैसे कवीर, तुलसी, नानक आादि के ग्रन्थों में से किसी से भी प्रमाणित होना चाहिए। जव इसे कोई गलत सिद्ध नहीं कर देता तव तक इसके सिवाय मेरा दूसरा कोई कर्त्तव्य नहीं है। हमने इस जीवन को इसे सत्कार्य समझकर इसके लिए समर्पित कर दिया है तव फिर मेरा दूसरा कार्य ही क्या है जो करूँ अर्थात् यही करूँगा।

भगवत् प्रेमी वन्धुओं अभी तो आप दूर हैं। इसे जाने नहीं, देखे नहीं तथा वातें भी नहीं किये परन्तु कम से कम मेरे इस वात पर थोड़ा सा आप लोग भी विचार तो करें कि यदि उपरोक्त मेरी बातें और घोषणाएँ सत्य हों। तव मैं क्या कहूं और क्या करूँ? कुछ देर के लिए आप लोगों की वातों पर मैं विचार करते हुए जव यह मानने की कोशिश करता हूं कि ठीक है मैं भी यह कहूं कि "परमात्मा को न तो जाना जा सकता है, न देखा जा सकता है और न बातें की जा सकती हैं।" तो ऐसी वात पर मेरा दिल वार-वार यह चिल्लाते हुए कहता है कि झूठ क्यों बोल रहे हो, झूठ क्यों मान रहे हो, दुनिया माने या न माने तू अपने को जानते हुए ऐसो गलत वातों को क्यों मानेगा और असत्य क्यों कहेगा। जो तू जानता है, जिस पर तुझे रत्तीभर भी शंका नहीं है तो "तू

सही कहो और सही मानो।" इन्हीं बातों की झकझोरों से मुझे मजबूर होकर यह सत्य कहना पड़ता है कि मैं परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) को जानता हूं, देखता हूं, और उनसे बातें भी करता हूं। यदि कोई सत्यान्वेषी, जिज्ञासु, श्रद्धालु त्यागी और निष्कपटी आये तो ऐसा ही करा भी सकता हूं, इसे ही मानने के लिए मुझे मेरा दिल मजबूर कर देता है क्योंकि यही सत्य है भी।

कुछ मान्य लोगों का कहना है कि "क्या किसी ने परमात्मा खुदा या गॉड (*God*) को देखा है ? तो मैं कहता हूं हाँ। उदाहरणस्वरूप ब्रह्माजी, नारदजी, हनुमान, सेवरी, प्रहलाद, ध्रुव, अर्जुन, उद्धव, गोपियाँ, हारुन, ईशा, मुसा, नानक, कबीर आदि आदि।

कुछ मान्य लोगों का कहना है कि जो ईश्वर को जानता है वह कहता ही नहीं या वह धरती पर रहता ही नहीं। तो इस पर मेरा कहना है कि जानने, देखने तथा बातें करने वाले कहे नहीं, जनाये नहीं, बताये नहीं तो ग्रन्थ कैसे तैयार हो गये ? कहानियाँ बिना बताये और बिना लिखे ही तैयार हो गयीं अर्थात् ऐसे लोगों की बातें निराधार, तर्क-हीन एवं तथ्यहीन हैं। परमात्मा तो जानने, देखने तथा सामान्य मानव की तरह बात-चीत की जाने वाली एक शक्ति है। वास्तविकता अथवा सत्यता तो इसमें है कि जो जानेगा वही जनायेगा, जो देखेगा वही दिखा-येगा तथा जो उनसे बात-चीत करता होगा वही बात-चीत भी करायेगा। जो न जानता हो, न देखा हो और न बात ही करता हो, वह कैसे जनायेगा, दिखायेगा और बातें करायेगा ? अर्थात् नहीं करा पायेगा।

सामान्य सिद्धान्त एक यह भी है कि किसी भी वस्तु या विषय पर किसी व्यक्ति की बात को उदाहरणस्वरूप पेश करना हो तो पहले इस बात पर ध्यान दिया जाय कि उस वस्तु या विषय पर उनकी कहाँ तक जानकारी अथवा पहुँच है जिनके विषय में वह बाते करते हों। यदि उस

विषय अथवा वस्तु पर उनकी जितनी जानकारी है उसके अन्दर बात करते हैं तब तो ठीक है परन्तु जिस वस्तु या विषय के बारे में अपनी जानकारी के बाहर बातें करते हों तो ऐसे व्यक्ति की बातों को उदाहरणस्वरूप भूलकर भी पेश नहीं करना चाहिए। अनुकूलता पर चलनी चाहिए, प्रतिकूलता पर नहीं उदाहरणस्वरूप-धर्म के विषय में जानकारी करना हो तो सन्त महात्माओं को देखा जाय जैसे—राम, कृष्ण, नारद, प्रह्लाद, मुहम्मद साहब, नानक, ईशु, कबीर आदि को देखा जाना चाहिए। कवियों एवं नास्तिकों का नहीं जैसे—चारवाक, महाबीर, मार्क्स, रजनीश, आत्मानन्द आदि आदि को नहीं।

बन्धुओं एक बार पुनः अपनी बात कहना चाहता हूँ। आप मुझे सत्य माने या असत्य, स्वाभिमानी मानें या अभिमानी, आस्तिक माने या नास्तिक, अहंकारी माने या ज्ञानी या जो कहें या माने मैं स्वीकार करता हूँ परन्तु एक बात मैं भी कहता हूँ यदि अच्छा लगे तो स्वीकार किया जाय और गलत लगे तो अस्वीकार कर दिया जाय। मैं मनवाने नहीं जाऊँगा और वह बात यह है कि आप लोग मेरे इस "सत्यज्ञान" को जानें, परीक्षा करें। यदि सत्य हो तो मुझे इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग देवें और असत्य हो तो इसे छोड़कर पुनः सत्य की खोज किया जाय। मेरी यह जबर्दस्त घोषणा है कि इन पूर्वोक्त भगवानों एवं महात्माजी लोगों में जो भी श्री बालयोगेश्वरजी महाराज, श्री सत्यपालजी महाराज, भगवान् सत्य श्री साँईबाबा, भगवान् श्री रजनीश, महर्षि महेशयोगी, महर्षिमेंहीं, प्रजापिता ब्रह्माकुमारीजी, श्री देवरहा बाबा, श्री जयगुरुदेव-बाबा, श्री शंकराचार्यजी, श्री करपात्रीजी अथवा एक क्षेत्रीय सामान्य महात्मा आत्मानन्दजी आदि आदि तथा इनके सिवाय भी अभी तक विश्व में दूसरा कोई ऐसा पैदा नहीं हुआ है जो इन पूर्वोक्त मूलभूत प्रश्नों का सही उत्तर दे। यदि कोई देने के लिए तैयार हो तो मैं उसे सादर आमन्त्रित करता हूँ।

प्रथम अध्याय के अन्त में समस्त भग्रवत् प्रेमी वन्धुओं से यह पुनः वता देना चाहता हूं कि "सत्ययुग प्रारम्भ हो गया है, सत्य ही प्रधान होगा इसलिए अव जप, तप, ब्रत, नेम, किर्तन, तीर्थ स्थान, रोजा नमाज मात्र तथा बाहरी मात्र पूजा-पाठ यहां तक कि अव सत्य ज्ञान, (तौहीद) के विना योग से भी मुक्ति नहीं मिल सकती। परमपद, परमगति, परमानन्द, अमरत्व, मोक्ष, परमशान्ति, ब्रह्मपद, ब्रह्मानन्द, आदि आदि अव उपरोक्त साधनों में से कोई नहीं दे सकता। जव देगा तव सत्यज्ञान ही दे सकता है। 'सत्यज्ञान' ही एक ऐसी वात अथवा जानकारी है जिसके द्वारा उपरोक्त समस्त पदों अथवा गतियों को एक साथ ही (सत्य ज्ञान) (तौहीद) ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही साथ तुरन्त परमात्मा खुदा, या गॉड (*God*) की जानकारी, दर्शन तथा वात-चीत की जा सकती है। यह सत्य ज्ञान 'सन्त ज्ञानेश्वर' श्री सदानन्द जी 'परमहंस' सत्य ज्ञान परिषद, अमरपुरी आश्रम (भागवन परसा) पत्रालय वथुआ वाजार जिला-गोपालगंज विहार भारत वाले प्रदान कर रहे हैं।

इसके शर्त यह है कि-श्रद्धालु एवं जिज्ञासु भाव से निष्कपट पूर्वक सन्त जी से मिलें, अपने शंकाओं का समाधान करें, तत्पश्चात ईश्वरीय सम्पत्ति (तन-मन-धन) को ईश्वर, जो आप के समक्ष जानने, देखने तथा पहचानने में आये, उसे समर्पित कर उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलने के लिए प्रतिज्ञा करें।

वन्धुओं इन पूर्वोक्त भगवानों एवं महात्मा जी लोगों के पास एक-एक पंजीयन पत्र तथा तीन-तीन अनुस्मारक पत्र भेजे गये परन्तु ऐसा लगता है कि यह सव मजाक हो रहा है इसीलिए ये लोग चुप्पी साधे वैठे हुए हैं अगले अध्याय में पंजीयन पत्र तथा अनुस्मारक पत्रों को उसी रुप में आप के समक्ष उपस्थित कर दिया जा रहा है कि आप लोग भी इस वात से अच्छी तरह अवगत हो जाय।

॥ ॐ तत्सत् ॥

द्वितीय अध्याय

(आध्यात्मिक क्रान्ति)

महात्माजी लोगों के पास भेजे गये पंजीयन-पत्र

एवं

अनुस्मारक-पत्र

पंजीयन-पत्र का प्रारूप

ॐ तत्सत्

(सत्यमेव जयते)

प्रेषक:– संस्था का नाम

आध्यात्मिक अनुसन्धान प्रतिष्ठान सत्यज्ञान परिषद, सतपुरी आश्रम
एवं योग साधना केन्द्र, सतपुरी आश्रम संस्थापक:–
पत्रालय-नरहवां शुक्ल संत ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस
जिला-गोपालगंज (विहार) स्थापित जून सन् १९७७ ई०
भारत दिनांक ३–८-७८ ई०

प्रेष्य..................

समस्त भगवानों एवं महात्माजी लोगों के पास

आदरणीय महानुभाव,

सत्यज्ञान परिषद का एक "शिंष्ट मण्डल'; सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस के नेतृत्व में आप से महत्वपूर्ण विषयों पर साक्षात्कार का निर्णय लेना चाहती है।

विषय:—

१—सत्यज्ञान (सत्यधर्म) क्या है ?

२—ज्ञान एवं योग क्या एक ही है ?

३—धर्म एक है या अनेक ?

४—विभिन्न धर्म प्रचारकों में एकता क्यों नहीं ?

५—सम्पूर्ण धर्म प्रचारकों का संचालक एक ही क्यों नहीं ?

६—विश्व शान्ति एवं धर्म का आधार विन्दु क्या है ।

७—क्या परमात्मा की जानकारी, दर्शन, प्राप्ति तथा उनसे वातें की जा सकती है ? यदि हाँ तो कैसे ? और नहीं तो क्यों ?

८—क्या परमपिता परमेश्वर, अल्लाह (*God*) गॉड का अपने शक्तियों के साथ अवतरण हो चुका है ? यदि हाँ तो कहाँ और कैसे पहचाना जाय । यदि नहीं तो कब होगा ?

९—क्या विश्व में "सर्व-धर्म-समन्वय सम्मेलन" सम्भव है ?

उपरोक्त प्रश्नों के आधार पर "सत्यज्ञान परिषद" अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु "अखिल विश्व सर्वधर्म-समन्वय सम्मेलन" का आयोजन करना चाहती है ।

सत्यज्ञान परिषद का लक्ष्य:—

१—सम्पूर्ण धर्म एक हों ।

२—सम्पूर्ण धर्म का संचालक एक हो ।

३—संचालक वही हो जो सर्वश्रेष्ठ अध्यात्म (तौहीद) वेत्ता हो ।

४—जो धर्म के आधार पर सुख, शांति, यश, एकता तथा मुक्तिदाता हो वही, सभी का संचालक हो ।

५—जो प्राणी मात्र से द्वेष एवं दुर्भावना निकालकर प्रेम एवं सद्भावना स्थापित करता हो, वही संचालक हो।

जिसके अन्तर्गत पूर्ण विश्वास के साथ पूर्ण आशा की जाती है कि आप महानुभाव अपना अमूल्य समय प्रदान करेंगे।

सुविधा के लिए कार्य-क्रम की सूची संलग्न है। यदि इसमें कोई असहमति हो तो पत्र प्राप्ति के एक सप्ताह के अन्दर सूचित करने का कष्ट करें ताकि शिष्ट मण्डल तदनुसार तिथियों का समायोजन कर सके।

आपसे वार-वार अनुरोध है कि आप उक्त तिथि पर कहाँ मिलेंगे तथा अपने स्थान (प्रधान कार्यालय) पर १५–१०–७८ से १५-११–७८ के वीच किस तिथि से किस तिथि तक उपस्थित रहेंगे यह सूचित करने की कृपा करें जिससे हम लोगों की परेशानी हल हो सके।

प्रतिलिपि प्रत्येक को प्रेषितः—

श्री वावा जयगुरुदेवजी महाराज	मथुरा
श्री श्रीरामजी शर्मा	हरिद्वार।
श्री महर्षि महेषयोगी	ऋषिकेश, हरिद्वार।
श्री सत्य साईं वावा	पुट्टपार्थी, आन्ध्र-प्रदेश।
श्री महात्मा सम्पूर्णानन्दजी द्वारा श्री वाल्योगेश्वरजी महाराज—	दिल्ली।
श्री सत्यपालजी महाराज	हरिद्वार, दिल्ली।
श्री आचार्य रजनीश	वम्बई, (पूना)।
श्री करपात्रीजी महाराज	वाराणसी।
श्री अरविन्द आश्रम	पाण्डिचेरी, (मद्रास)।
श्री शंकराचार्यजी महाराज	ज्योतिर्मठ
श्री महर्षि मेंहीं	कुप्पाघाट भागलपुर। (विहार)
श्री देवरहवा वावा	भागलपुर-देवरिया। (उ० प्र०)
श्री प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी	माउण्ट आवू, राजस्थान।
श्री आत्मानन्दजी परमहंस	प्रेम नगर, वरौली, गोपालगज।

यात्रा का समय क्रम

१५-१०-७८ से १५-११-७८ तक

१—मथुरा-१७-१०-७८ से १८-१०-७८ तक।
२—दिल्ली-२०-१०-७८ से २१-१०-७८ तक।
३—हरिद्वार-२३-१०-७८ से २४, २५-१०-७८ तक।
४—(पूना) वम्बई-२८-१०-७८ से २९-१०-७८ तक।
५—पुट्टपार्थी-१-११-७८ से २-११-७८ तक।
६—पाण्डीचेरी-५-११-७८ से ६-११-७८ तक।
७—वाराणसी-९-११-७८ से १०-११-७८ तक।
८—भागलपुर (देवरहा वावा) १२-११-७८ को।
९—भागलपुर (महर्षि मेंहीं) १४-११-७८ को।

उपरोक्त तिथि पर हमारा शिष्ट मण्डल आप से मिलना चाहता है।

सत्यमेव जयते

प्रधान कार्यालय
आध्यात्मिक अनुसन्धान प्रतिष्ठान एवं
योग साधना केन्द्र, 'अमरपुरी आश्रम'
(भागवत परसा) पो०—वथुआ वाजार
जिला-गोपालगंज (विहार) भारत

भवदीय
सत्य ज्ञान परिषद
सतपुरी आश्रम (वंगरा) पो०
नरहवां शुक्ल जिला-गोपाल
गंज (विहार) भारत
हस्ताक्षर सचिव

पंजीयन पत्र का यह जो रूप दिया गया है इसी रूप का प्रत्येक के पास गया। केवल श्री शंकराचार्य जी के पास से पंजीयन पत्र (रजिस्टर्ड लेटर) वापस आया तथा सभी लोगों के पास से केवल वापसी पत्र (एक-नालेज मेन्ट) आया उसके बाद तीन-तीन अनुस्मारक पत्र (रिमाइन्डर्स) भी भेंजे गये जो अब क्रम से रखे जा रहे हैं। अगले पृष्ठों पर देखनेका कष्ट करें।

अनुस्मारक पत्र (प्रथम)

आध्यात्मिक क्रान्ति

विशेष- अमरपुरी आश्रम

दिनांक १४-८-७८

विषय—(सत्यज्ञान परिषद के शिष्ट मण्डल से साक्षात्कार के सम्बन्ध में)

महोदय,

कृपया सत्य ज्ञान परिषद पत्रांक……दिनांक ३-८-७८ का अवलोकन करने का कष्ट करें। सन्दर्भित पत्र द्वारा आप से साक्षात्कार हेतु कार्यक्रम संलग्न कर स्वीकृति की मांग की गयी थी।

अब तक आप का उत्तर इस परिषद को प्राप्त नहीं हुआ है। विषय की महत्ता को दृष्टिगत कर शीघ्रातिशीघ्र स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करें। ताकि अग्रिम कार्यवाही की जा सके। पत्र व्यवहार अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा) पो० बथुआ बाजार, जिला-गोपालगंज (विहार) के माध्यम से किया जाय।

धन्यवाद

भवदीय

सचिव

प्रतिलिपि प्रत्येक की

अन्डर पोस्टिंग सर्टिफिकेट द्वारा प्रेषित

हस्ताक्षर

सचिव

अनुस्मारक-पत्र (द्वितीय)

आध्यात्मिक क्रान्ति

पत्रांक..........विशेष

अमरपुरी आश्रम

दिनांक १८-९-७८ ई०

सेवा में,

विषय—सत्यज्ञान परिषद् के शिष्ट मण्डल के साक्षात्कार हेतु तिथि निर्धारण के सम्बन्ध में)

महोदय,

कृपया इस संस्था के रजिस्टर्ड पत्र दिनांक ३-८-७८ तथा अनुस्मारक पत्र दिनांक १४-८-७८ ई० का अवलोकन करें। उपरोक्त पत्र के द्वारा आपके पास शिष्ट मण्डल का कार्य-क्रम संलग्न किया गया था किन्तु अब तक आप की स्वीकृति पत्र प्राप्त नहीं हुई है।

चूंकि शिष्ट मण्डल के प्रस्थान का समय लगभग १ मास के है। बिना आपके स्वीकृत कार्यक्रम के शिष्ट मण्डल को व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

ऐसी परिस्थिति में इस महत्वपूर्ण कार्य में आप का सहयोग परम वांछनीय है यदि प्रस्थान के १५ दिन पूर्व तक आप की सूचना नहीं मिलती है तो शिष्ट मण्डल पूर्व संलग्न कार्यक्रम के अनुसार आप के नगर में आप से निश्चित रूप से सम्पर्क स्थापित करेगा तथा प्रेषित विषयों पर निर्णय लेना चाहेगा।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप इस संस्था के इस कार्य में उचित सहयोग प्रदान करेंगे। आप के सुविधा के लिए पुनः पंजीयन पत्र तथा कार्यक्रम वाला पत्र संलग्न किया जा रहा है।

धन्यवाद — भवदीय

प्रतिलिपि प्रत्येक को अण्डर पोस्टिंग सर्टिफिकेट द्वारा प्रेषित

सचिव
सत्य ज्ञान परिषद
अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा)
वथुआ बाजार, गोपालगंज–विहार

हस्ताक्षर
सचिव

अनुस्मारक-पत्र (तृतीय)
आध्यात्मिक क्रान्ति

अमरपुरी आश्रम
दिनांक ४-११-७८ ई०

सेवा में,

कृपया इस संस्था का रजिस्टर्ड पत्र दिनांक ३-८-७८ तथा अनुस्मारक पत्र दिनांक १४-८-७८ तथा १८-९-७८ का अवलोकन करें। उपरोक्त पत्रों द्वारा आपसे इस संस्था द्वारा प्रेषित 'शिष्टमण्डल' से साक्षात्कार हेतु समय की मांग की गयी थी। किन्तु सखेद (दुःख के साथ) सूचित किया जाता है कि इतने महत्वपूर्ण विषय पर आप लोगों द्वारा किसी भी कार्यवाही का न किया जाना एक गम्भीर समस्या के रूप में आ गया है। उपरोक्त समय के स्वीकृति के अभाव के कारण शिष्टमण्डल को सभी प्रकार की तैयारी के बाद भी अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ी, जिससे हमें विशेष क्षोभ है।

आप लोग इतने पहुँचे हुए महापुरुष, महात्मा एवं स्वयं को भगवान् कहने वाले होते हुए भी साक्षात्कार देने अथवा लेने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं यह अत्यन्त ही अफसोस एवं कष्टदायी बात है।

आप लोग आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान, ब्रह्मज्ञान या ईश्वरीय ज्ञान आदि का चोंगा पहनकर भोले-भाले समाज के आँख में धूल क्यों झोंक रहे हैं। यदि आप सत्य हैं तो साक्षात्कार देने अथवा लेने के लिए दिनांक १ मार्च से १५ अप्रैल तक के बीच कोई तिथि निश्चित करके प्रेषित करने का कष्ट करें।

हम आपके इस कार्य के लिए विशेष आभारी रहेंगे।

यदि आप लोग तैयार नहीं होंगे तो हम लोग इस बात की जानकारी दैनिक पत्रों आदि आदि के माध्यम से आप के अनुयायी वर्ग के साथ ही जन-जन तक पहुँचायेंगे। इस कार्य की पूर्ति हेतु हमारा कार्य अनवरत होगा ताकि सत्यधर्म (तौहीद) का ज्ञान सबको सुलभ हो सके। हम इस हेतु हर प्रकार की परिस्थिति का सामना करने हेतु दृढ़ संकल्प हैं। यदि आप सोचते हों कि आप शान्तिपूर्वक बैठे रहें तो आप बैठें परंतु हम लोग अपने तथ्यों (लक्ष्यों) की पूर्ति हेतु हर कदम अपनायेंगे। इसके लिए जो भी कष्ट होगा सहन करेंगे। परन्तु चुप-चाप शान्तिपूर्वक बैठ नहीं सकते। कष्टों के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

विनीत

सचिव

सत्य ज्ञान परिषद अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा)

पोस्ट—बथुआ बाजार जिला गोपालगंज, (बिहार) भारत

प्रति निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः—

बाबा जयगुरु देव	मथुरा।
श्री श्रीरामजी शर्मा	हरिद्वार।
,, महर्षि महेश योगी	ऋषिकेश।
,, भगवान् श्री सत्य साईं बाबा	पुट्टपार्थी, आन्ध्रप्रदेश।
,, बाल्योगेश्वरजी महाराज	दिल्ली।
,, सत्यपालजी महाराज	दिल्ली।
,, भगवान् श्री रजनीश जी	पूना।
,, करपात्रीजी महाराज	वाराणसी।
,, अरविन्द आश्रम	पाण्डीचेरी।
,, महर्षि मेंहीं	कुप्पाघाट भागलपुर।
,, देवरहा बाबा	भागलपुर देवरिया।
,, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी	माउण्ट आबू–राजस्थान।
,, आत्मानन्दजी परमहंस	प्रेमनगर–बरौली गोपालगंज।

बन्धुओं उपरोक्त पंजीयन-पत्र एवं अनुस्मारक पत्रों से आप लोगों को पता लग गया होगा कि इन पूर्वोक्त भगवानों एवं महात्मा जी लोगों से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों के द्वारा इस सत्यज्ञान की परीक्षा करने हेतु कितनी प्रार्थनाएँ, कितने आग्रह एवं बाद में (तृतीय अनुस्मारक पत्र में) कितनी कड़वे शब्दों का भी प्रयोग किया जा रहा है। फिर भी ये लोग न तो अपना साक्षात्कार देने ही के लिए और न मेरा साक्षात्कार करने के लिए ही यानी किसी भी आधार पर ये लोग मुझसे बातें करने को तैयार नहीं हो रहे हैं।

उपरोक्त कार्यवाहियों से पता लग जाना चाहिए कि कितनी शिष्टता एवं आसान-प्रक्रिया के द्वारा कार्यवाही प्रारम्भ हुआ। अव तो हम यह कहने के लिए वार-वार मजबूर हो रहे हैं कि इन पूर्वोक्त महात्माजी लोगों को इतनी जानकारी नहीं, इतनी हिम्मत नहीं तथा इतनी क्षमता नहीं कि शांतिपूर्वक प्रमाणिकता के साथ इन पूर्वोक्त प्रश्नों पर इसके सैद्धान्तिक प्रायौगिक एवं व्यावहारिक आदि किसी भी पहलुओं (स्तरों) पर विचार-विमर्श (साक्षात्कार के रूप में) कर लें। जो भी हो मैं अपनी कार्यवाही तव तक अनवरत जारी रखूँगा जव तक कि इसका निर्णय न हो जाये।



ॐ तत्सत्

तृतीय अध्याय

(आध्यात्मिक क्रांति)

सत्य ज्ञान परिषद तथा इसका उद्देश्य

सत्य ज्ञान परिषद

सत्यज्ञान परिषद्, सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस द्वारा संस्थापित एक पूर्णरूपेण धार्मिक संस्था है जिसकी स्थापना जून सन् १९७७ ई० को सतपुरी आश्रम (बंगरा) पत्रालय नरहवां शुक्ल जिला गोपालगंज-विहार भारत में हुई। यह संस्था अपने उद्देश्यों का प्रचार-प्रसार करते हुए अब तक तीन आश्रमों की स्थापना भी कर चुकी है।-

(१) आध्यात्मिक अनुसन्धान प्रतिष्ठान एवं योग साधना केन्द्र, सतपुरी आश्रम [बंगरा] पत्रालय–नरहवां शुक्ल जि० गोपालगंज विहार।

(२) आध्यात्मिक अनुसंधान प्रतिष्ठान एवं योग साधना केन्द्र, नारायणपुरी आश्रम, (सूरजपुर) पत्रालय सूरजपुर जि० पश्चिमी चम्पारण (बेतिया) विहार, भारत।

(३) आध्यात्मिक अनुसंधान प्रतिष्ठान एवं योग साधना केन्द्र, अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा) पत्रालय बथुआ बाजार जि० गोपालगंज, विहार भारत।

वर्तमान समय में अमरपुरी आश्रम प्रधान कार्यालय के रूप में कार्यरत है अर्थात् प्रत्येक पत्राचार आदि कार्यवाही प्रधान कार्यालय के द्वारा ही सम्पन्न हो रहा है।

सत्यज्ञान परिषद के कार्यक्रम महान् आश्चर्यजनक हुआ करता है। इसके पम्पलेट (पोस्टर) तथा पर्चे आदि भी ऐसे निकलते हैं कि देखते ही देखते लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं। नास्तिकों व अधार्मिकों के तो दिल में धड़कन होने लगती, उनके रोंगटे खड़े हो जाते तथा उनमें वौखलाहट (वेचैनी) यानि अशान्ति की लहर दौड़ने लगती है फिर भी मेरे कार्यक्रमों पर इन लोगों के अशान्ति या वौखलाहट आदि का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, समय आने पर सब ठीक हो जाता है। अंधेरा की क्या हिम्मत की प्रकाश को रोक दे, अज्ञान की क्या हिम्मत की ज्ञान को रोक दे, रात्रि की क्या हिम्मत की सूर्य को रोक दे तथा नास्तिक और अधार्मिकों की क्या हिम्मत की किसी के धार्मिक कार्यक्रमों को रोक दे। हाँ, जब इन्हें विनष्ट होना होता है तब ये टकराते अवश्य हैं। परन्तु फल (निर्णय) आदि काल से ही इन उपरोक्त प्रत्येक (वामपंथी) के प्रतिकूल ही हुआ है। और हमारे यहां भी उसी तरह हो रहा है हमारे यहाँ पोस्टर और पर्चों के विषय में जो कि आश्चर्य जनक बताया जा रहा है उदाहरण-स्वरूप एक-एक का रूप निम्नलिखित है—

(क) पोस्टर (**सत्य ज्ञान परिषद्**)

ॐ तत्सत्

असतोमासद्गमय तमसोमाज्योतिर्गमय मृत्योमामृतम्गमय

आओ भागवत परसा चलें

क्या बात है ?—**विराट सत्संग समारोह हो रहा है।**

कब से कब तक ?—२६-६-७८ से २६-६-७८ तक

कार्यक्रम—११ बजे से २ बजे दिन तथा ८ बजे से ११ बजे रात्रि तक सत्संग। ऐसा-ऐसा बहुत सत्संग होता है—ऐसी बात नहीं है—इसमें एक विशेषता है। क्या-यह कि—इसमें परमात्मा (खुदा) को जनाया, दिखाया तथा उनसे बातें करायी जायगी।

क्या-परमात्मा; खुदा (*God*) आदमी है—नहीं, वह एक शक्ति है जो तत्वज्ञान के द्वारा प्राप्त होगा।

यह जादूगरी, हिप्नोटिज्म व मिस्मरीज्म आदि हो सकता है—बिल्कुल गलत ऐसा कभी नहीं हो सकता।

क्यों—इसलिए कि वेद, पुराण, उपनिषद, गीता, रामायण, बाइबिल, कुर्आन आदि धार्मिक ग्रन्थों के द्वारा प्रमाणित कराया जाता है। ये सभी जादूगरी मिस्मरीज्म व हिप्नोटिज्म की पुस्तकें नहीं। सत्य प्रमाणित ग्रन्थ हैं।

किस तरह जनाया व दिखाया जायगा—उसी तरह-ब्रह्मा नारद, गरुण, प्रह्लाद, हनुमान, लक्ष्मण, उद्धव, अर्जुन, पार्वती, सेबरी, हारुन, मुसा, ईशु, स्वामी विवेकानन्द आदि जिस तरह जाने व पाये थे !

कौन जनायेगा व दिखायेगा—सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्द जी परमहंस।

संयोजक
ललिताराय (भागवतपरसा)
श्री रामबधार राय (,,)
श्री जनार्दन मिश्र (बिरिसा बथुआ)
श्री दामोदर चौधुर (फुलवरिया)
श्री दिनेश प्रसाद (भागवत परसा) आदि।

विनीत
सत्य ज्ञान परिषद, सतपुरी आश्रम (वंगरा)
पो०—नरहवां शुक्ल जिला—गोपालगंज
विहार—भारत

(ख) पोस्टर [बौखलाहट वाला]

विराट सत्संग समारोह

परमात्मा को जानो-देखो-पहचानो

भगवत् प्रेमी भाइयों एवं बहनों,

अपार हर्ष की बात है कि ग्राम-पोस्ट तरया लक्षीराम जिला-देवरिया में सत्संग समारोह का आयोजन हुआ है जिसमें भाग लेने वाले व्यक्तियों को परमात्मा का दर्शन तथा उनसे बात-चीत कराया जायगा।

कार्यक्रम

दिनांक १० नवम्वर ७७ से १२ नवम्बर ७७ तक दिन में ११ बजे से ३ वजे तक तथा रात्रि में ७ बजे से १० तक सत्संग प्रवचन। दिनांक १३ नवम्वर ७७ को ११ बजे दिन से २ वजे तक सत्संग तथा रात्रि ७ वजे से परमात्मा को जानना दर्शन करना तथा वातचीत करना है।

संयोजक
श्री आनन्द मोहन श्रीवास्तव
श्री रामा मिश्र

विनीत
तरया लक्षीराम
ग्राम पो० तरया लक्षीराम
जि०—देवरिया उ० प्र०

उपरोक्त पोस्टर में परमात्मा को जानो-देखो-पहचानो वाली वात प्रत्येक को महान आश्चर्यजनक लगती है तथा नास्तिकों और अधार्मिकों के हृदय में वौखलाहट पैदा करती है जिसके द्वारा वे सव, इसे रोक देने के लिए हर-कदम अपनाते हैं, परन्तु क्या करे असफलता हाथ लगती है।

पर्चा [सत्य ज्ञान परिषद का]

।। सद्गुरुचरणकमलेभ्योनमः ।।

परमात्मा को जानो-देखो-पहचानो

भगवत् प्रेमी भाइयों एवं वहनों,

अपार हर्ष की वात है कि आपके क्षेत्र सूरजसुर में एक सत्संग का आयोजन किया गया है जो दिनांक १८-२-७८ रोज शनिवार माघ शुक्ल एकादशी से दिनांक २२-२-७८ बुधवार तक सम्पन्न होगा, जिसमें आध्यात्मिक अनुसन्धान प्रतिष्ठान एवं योग साधना केन्द्र, सतपुरी आश्रम (ब्रंगरा) जिला गोपालगंज (विहार) के सन्त ज्ञानेश्वर परमहंस सद्गुरुदेव श्री सदानन्द जी महाराज के द्वारा सत्संग का कार्य सम्पादन होगा। इस सतसंग समारोह की विशेषता यह होगी कि जो व्यक्ति जिज्ञासु के रूप में सत्संग समारोह में चार

दिन उपस्थित रहेंगे तथा योग्य पाये जायेंगे तो इन्हें परमात्मा का साक्षात्कार दर्शन तथा उनसे वात-चीत करायी जायगीं। कोई कार्य बहुत आश्चर्य का है इसलिए इसे गलत नहीं मान लेना चाहिए क्योंकि इसी दुनियां में आश्चर्यजनक कार्य होते आये हैं।

इसलिए यदि कोई ऐसा कार्य हो तो उसे जानने, देखने तथा पहचानने का प्रयत्न करना चाहिए।

अतः आप समस्त भगवत् प्रेमी भाइयों एवं बहनों से साग्रह निवेदन है कि ऐसे सुअवसर का लाभ उठावें।

कार्यक्रम

] १] दिनांक १८-२-७८ से २२-२-७८ दिन के ११ बजे से २ बजे तक तथा रात्रि में ७ बजे से १० बजे तक सत्संग प्रवचन होगा।

[२] दिनांक २२-२-७८ बुधवार को ११ बजे से २ बजे तक सत्संग तथा रात्रि ७ बजे से योग्य पाये जाने वाले व्यक्तियों को परमात्मा का दर्शन तथा उनसे वात-चीत करायी जायगी।

[३] प्रत्येक दिन सुबह ८ बजे से ११ बजे तक तथा शाम को ४ से ६ बजे तक शंका समाधान होगा। शंका-समाधान शास्त्रीय होगा मनमाना नहीं।

नोट—प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा की प्राप्ति में इन्तजारी नहीं करनी चाहिए। अवसर मिलते ही दर्शन कर लेना चाहिए। ऐसा अवसर दुर्लभ होता है, लाभ उठावें अन्यथा पछतायेंगे।

स्थान—परवनहां बाजार से १ मील पश्चिम उत्तर के कोने पर

कार्यक्रम-संयोजक—
मैनेजर प्रसाद सिंह
ग्राम-पो०-सूरजपुर
जि०-पश्चिमी-चम्पारण
(बेतिया) बिहार

विनीत—
हीरालाल, वंशनरायन सिंह,
मैनेजर प्रसाद सिंह राधेश्याम
गोपी महतो, विक्रमा प्रसाद,
हीरा प्रसाद मथुरा प्रसाद
विशन राव, गया पाण्डेय।

बन्धुओं ऐसे-ऐसे अनेकों कार्यक्रम हुए जिसमें उपरोक्त तरीके से ही पोस्टर एवं पर्चों द्वारा इस सत्यज्ञान (तौहीद) की सत्यता की परीक्षा के लिए घोषणाएँ की गयी। परन्तु आज तक अनेकों धार्मिक, नास्तिक विद्वान् एवं अहंकारी भी आये परन्तु वे भी इसकी सत्यता को स्वीकार किये। अनेकों आर्यसमाजी जो चारोवेदों, छः दर्शन आदि जिन्हें जबान पर था आये और इसकी सत्यता को स्वीकार किये। अनेकों कम्यूनिष्ठ जिसके लिए "धर्म जनता पर एक अभिशाप है विनाशक है" वे भी आये और हमारे समक्ष विचार-विमर्श के बाद इसकी सत्यता को स्वीकार किये। अब इसीलिये इस 'सत्यज्ञान' को परीक्षा के लिए पूरे विश्व के समक्ष रखा जा रहा है कि कोई भी आकर साक्षात्कार एवं परीक्षा कर सकता है। शर्त यह है कि शान्तिपूर्ण ढंग से, निष्कपठता पूर्वक प्रत्येक कार्यवाही होनी चाहिए।

सत्य ज्ञान परिषद इतनी कम समय के अन्तर्गत इतना तेजी से अपना कार्य कर रही है कि अभी डेढ़ वर्ष भी पूरे नहीं हुए कि इसका कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण भारतवर्ष ही बन गया। आप दूसरे अध्याय के पंजीयन-पत्र और अनुस्मारक-पत्रों को तथा पहले अध्याय के घोषणाओं को देखकर स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि इस संस्था का क्रिया-कलाप कितनी तेज गति से हो रही है। मैं इस बात को बहुत बढ़ाना नहीं चाहता परन्तु इतना अवश्य बताना चाहता हूं कि धार्मिक मामलों में विश्व की यह पहली संस्था है जो इतनी तीव्र गति से कार्य कर रही है।

(आध्यात्मिक क्रान्ति)

सत्य ज्ञान परिषद का उद्देश्य

सत्यज्ञान परिषद का उद्देश्य यह है कि जन-जन तक कों सत्यज्ञान (तौहंद) (सत्य धर्म) की जानकारी करायी जाय। ज्ञान क्या है? योग क्या है? ज्ञान और योग में क्या अन्तर है? धर्म क्या है? मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? मानव का कर्तव्य क्या है? इसका मार्गदर्शन करना। साथ ही

अधर्मों को समाप्त करके उनके स्थान पर धर्म की स्थापना करना अर्थात् परमात्मा, खुदा (God) के विषय में जिज्ञासु व्यक्ति को हर तरह से पूर्ण रूपेण जानकारी देते हुए उनका दर्शन कराना तथा उनसे बात-चीत कराना। इन कार्यों के द्वारा समाज सुधार एवं समाजोद्धार ही हमारी संस्था का मूल उद्देश्य है। समाज सुधार बाह्य एवं भौतिक है जो कोई भी थोड़ा बहुत कर सकता है। परन्तु समाजोद्धार पूर्णतः आध्यात्मिक है जो सत्यज्ञान तौहीद के बिना हो ही नहीं सकता तथा जिसे सब कर भी नहीं सकते परन्तु हमारी संस्था बहुत ही आशानी से इस कार्य को कर लेती है।

सत्य ज्ञान परिषद पूर्णरूपेण एक धार्मिक संस्था है इसे किसी भी राजनीतिक अथवा साम्प्रदायिक संस्थाओं से तो कोई सम्बन्ध है और न करने का कोई विचार ही है। यह संस्था स्वतन्त्र रूप से धार्मिक कार्य कर रही है और करेगी भी, ऐसी आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है।

हमारी संस्था का एक महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से यह भी है कि सनातनधर्म, इस्लामधर्म, क्रिश्चियनधर्म, सिक्खधर्म आदि आदि विभागों में बंटे हुए सम्पूर्ण बनावटी इन धर्मों को एक करके यह दिखा देना कि "सम्पूर्ण धर्म एक है।" हम सभी स्वयंभूवमनु तथा शतरूपा से उत्पन्न होने के नाते सभी मानव अथवा मनुष्य कहलाते हैं ठीक उसी तरह बाबा आदम और हउवा से उत्पन्न होने के नाते आदमी कहलाते हैं। जब हम सभी मानव-मनुष्य एवं आदमी दोनों हैं तब भेद किस बात का है? क्या कोई ऐसा भी है जो अपने को मानव या मनुष्य न कहता हो? पुनः क्या कोई ऐसा भी है जो अपने को आदमी न कहता हो! अर्थात् हम सभी मानव एवं आदमी सब हैं इसीलिए सभी एक हैं। परन्तु एक होते हुए भी जाति-पाति के द्वारा आपस में भेद उत्पन्न कर एक दूसरे से ईर्ष्या-द्वेष आदि करते हैं। उसी तरह सभी धर्म एक हैं परन्तु हम लोगों ने इसमें भेद उत्पन्न कर लिया है ईशामसीह के अनुयाया ईसाई, मुहम्मद साहब के अनुयायी मुसलमान, गुरुनानक देव के अनुयायी सिक्ख। परन्तु सत्य बात यह है कि सभी

ने उसी एक परमात्मा, खुदा या गॉड (*God*) को आधार बनाया जो एक ही है, सबकी विचार धारायें भी एक ही थी परन्तु ना जानकार एवं ना समझदार उनके अनुयायिओं ने आपस में वर्ग विभेद उत्पन्न कर दिया। अतः हम सभी को एक होकर रहना चाहिए तथा इर्ष्या और द्वेष को हटाकर उसके स्थान पर आपस में प्रेम को स्थान देना चाहिए।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई।
सब आपस में भाई--भाई॥
अल्लाह ईश्वर तेरा नाम,
सबको सन्मत दे भगवान।
मन्दिर मस्जिद तेरो धाम,
सबका कल्याण करो भगवान्॥

सत्य ज्ञान परिषद के उद्देश्यों के मूलभूत उद्देश्यों में से एक यह भी है कि—

ज्योति से ज्योति जगाते चलो,
प्रेम की गंगा बहाते चलो।
राह में आये जो दीन दुःखी;
सबको गले से लगाते चलो॥

यह उपरोक्त गीत की बात तो रही सिद्धान्त की। परन्तु यह संस्था इसका प्रायौगिक एवं व्यावहारिक रूप प्रदान कर रही है।

पुनः हमारी यह संस्था समस्त धार्मिक बन्धुओं एवं माताओं बहनों को बता देना चाहती है सत्यज्ञान (तौहीद) (सत्यधर्म) वह है जिसके द्वारा परमात्मा, खुदा या (*God*) को जाना जाय, देखा जाय तथा उनसे बात-चीत किया जाय। और यह ज्ञान सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्दजी परमहंस प्रदान कर रहे हैं।

जो बात दवा से हो न सके, वह बात दुआ से होती है।
जब मुर्शिद कामिल मिलता है, तब बात खुदा से होती है॥

बन्धुओं अन्तिम में अपनी बातें बन्द करते हुए पुनः एक बार बता दे रहा हूँ कि "मेरी बातें सत्य एवं प्रमाणित हैं। कोई हस्ती नहीं, कोई महात्मा ऐसा पैदा नहीं जो इस उपरोक्त 'सत्य ज्ञान' को असत्य प्रमाणित कर सके।"

अतः इसी उपरोक्त सत्यज्ञान का प्रचार-प्रसार हमारी संस्था (सत्य ज्ञान परिषद) का मूल उद्‌देश्य है। इसके लिए जो भी करना पड़े हमें करना है, जितना भी कष्ट सहन करना पड़े सहन करना है परन्तु अपने उद्‌देश्य से पीछे नहीं हटना है।

योग हीनं कथं ज्ञानं मोक्षदं भवति ध्रुवम्।
योगोऽपि ज्ञान हीनस्तु न क्षमो मोक्ष कर्मणि ।।

"योगतत्त्वोपनिषद"

तावद्‌गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिने यथा।
न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदान्त केशरी ।।

श्री मद्‌आद्यशंकराचार्य

सामान्य शास्त्र, ग्रन्थ आदि तथा इसके जानकार तभी तक गर्जते हैं जब तक कि कोई वेदान्ती न आ जाय, किस तरह, तो ठीक उसी तरह जैसे जंगलों में गीदड़ (सियार) आदि गर्जते, शोर मचाते रहते हैं परन्तु जब एक शेर आकर एक बार भी दहाड़ देता है तो किसी का पता नहीं चलता। अर्थात् शास्त्र एवं शास्त्र मात्र के ज्ञाता लोग मूल्ला पंडित ज्ञानी या जानकार बनकर शोर मचाते रहते हैं परन्तु वेदान्त (तौहीद) का सैद्धान्तिक, प्रायोगिक एवं व्यावहारिक जानकार अर्थात् सत्यज्ञानी जब आता है तब किसी का भी पता नहीं चलता।

प्रस्तुत पुस्तक की एक-एक प्रति प्रत्येक पूर्वोक्त भगवानों एवं महात्मा जी लोगों को भेजी गयी। साथ ही उन लोगों के अनुयायिओं को दी जा रही है जिससे कि अब भी लोग तैयार हों या इन लोगों के अनुयायी इन लोगों को तैयार करायें या नहीं तो हमारे 'सत्यज्ञान' को स्वीकार करें। यह सामान्य बात नहीं इसे ही "आध्यात्मिक क्रान्ति" कहते हैं। धर्मगुरुओं के लिए प्रस्तुत

पुस्तक उसी रूप में हैं। जिस तरह राजाओं के बीच चक्रवर्ती सम्राट को जब कोई परास्त करने वाला नहीं मिलता तब अश्वमेघ यज्ञ करते हैं जिसमें एक घोड़ा छोड़ा जाता है। उस घोड़े के ललाट पर यह लिख कर कि "सभी लोग मेरी अधीनता स्वीकार करें। जिसे स्वीकार न हों युद्ध के लिए तैयार हो। इसे सभी राजा लोग स्वीकार करते थे जिसे अस्वीकार होता था वह घोड़े को रोक कर युद्ध करता था और परास्त होने के बाद स्वीकार कर लेता था। ठीक उसी प्रकार यह पुस्तक प्रत्येक भगवानों एवं महात्मा जी लोगों के पास वैसे ही लिख-कर कि इस "सत्य ज्ञान" को सभी भगवान एवं महात्मा जी लोग स्वीकार करें अन्यथा जिनको इसे असत्य ठहराना हो वे साक्षात्कार एवं परीक्षा, शान्ति-मय एवं निष्कपटभाव से लेने अथवा देने के लिए तैयार हो जाय। यदि इस बार कोई तैयार नहीं होगा तो मान लिया जायगा की सभी ने इस सत्य ज्ञान को स्वीकार कर लिए है तथा सभी लोग इस 'सत्यमेवजयते' रूपी सत्यज्ञान परिषद के झण्डे को भी स्वीकार कर लिया है। तब इस पुस्तक की लाखों-लाखों प्रतियाँ छपवाकर (मुद्रित कराकर) जन-जन तक पहुँचायी जायगी।

॥ सत्यमेव जयते नानृतम् ॥

सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्द जी परमहंस
सत्य ज्ञान परिषद
अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा)
पत्रालय—नथुवा बाजार,
जिला—गोपाल गंज
बिहार—भारत
३०-११-७८ ई०



———

एक विशेष सूचना

सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्द जी परमहंस के 'जन्मोत्सव' कार्यक्रम ५ जून सन् ७९ से १० जून सन् ७९ तक मनाया जायगा जिसमें 'सत्य लीला' नाटक के साथ ही निम्नलिखित कार्यक्रम भी होगा :—

॥ ॐ तत्सत् ॥

असतोमासद्गमय ! तमसोमाज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतंगमय

आओ चलें

अमरपुरी आश्रम

[भागवत परसा]

किस लिए विराट सत्संग समारोह हो रहा है

दिनांक ५-६-७६ से १०-६-७६ तक

(दिन में ११ से २ वजे तथा रात्रि ८ से ११ वजे तक "सत्संग प्रवचन" तथा शाम ३ से ५ वजे तक शंका समाधान)

ऐसा ऐसा वहुत सत्संग होता है ?

नहीं, ऐसा सत्संग सुनने को नहीं मिला होगा

क्यों इसलिए कि इसमें ?

परमात्मा का दर्शन तथा बातें कराई जायगी

क्या परमात्मा आदमी है ?

नहीं, परमात्मा खुदा (God) एक शक्ति है जिसे तत्व ज्ञान द्वारा प्राप्त किया जाता है

किस रूप में ?

उसी रूप में जिस रूप में ब्रह्माजी, ध्रुवजी, प्रहलाद, हनुमान, सेवरी, अर्जुन, उद्धव, हारुन, मूसा अली, नारद तथा गोपियां आदि ने किया था

ऐसा सम्भव नहीं ?

बिलकुल सम्भव है एवं पूर्णतः सत्य भी है करके देखें

जादू या हिप्नोटिज्म होगा ?

बिल्कुल गलत—सत्य प्रमाणित कराया जाता है

किससे ?

वेद पुरान, गीता, रामायण, बाइबिल तथा कुर्आन आदि से

कौन करा रहा है ?

सन्त ज्ञानेश्वर श्री सदानन्द जी परमहंस

यह कैसा महात्मा है ?

इस महात्मा ने विश्व के समस्त महात्माओं को धार्मिक खुली चुनौती दिया है कि या तो परमात्मा का दर्शन तथा बातें करावें या आकर करें

क्या किसी ने किया है ?

जी हाँ सैकड़ों कर चुकें हैं तब हमलोग भी अवश्य चलेंगे।

क्या स्त्रियों के लिये भी है ?

सभी के लिये है—किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं है।

क्या कोई शर्त भी है ?

हाँ, श्रद्धावान एवं जिज्ञासु भाव से सत्संग सुनें एवं निष्कपट पूर्वक सन्त जी से मिलें।

सन्त जी कहाँ के हैं ?

सत्य ज्ञान परिषद

सतपुरी आश्रम (वंगरा)
पो० नरहवां शुक्ल जि० गोपालगंज
(विहार) भारत

संयोजक—

सत्य ज्ञान परिषद

प्रधान कार्यालय—

सत्य ज्ञान परिषद

अमरपुरी आश्रम (भागवत परसा)
पो० वथुआ वाजार जि० गोपालगंज
(विहार) भारत

नोट—(१) अमरपुरी आश्रम (सिवान सक्शन से प्राइवेट बस द्वारा वथुआ वाजार के पास।)

(२) थावें जक्शन से बस द्वारा मीरगंज, हथुआ, बड़का गाँव होते हुए माणीपुर नहर पुल पर उतरें २ फलाँग पश्चिम तरफ आश्रम है।

(३) भोरे थाना से १० मील पूरब तरफ आश्रम स्थित है।

———

